6 ल + 7 यगणs [नाभ्यां सप्तयाः (प्रचित इति नयुग्मतो यैः) Jk. 6. 33] प्रचित.

6 + 16 रगणs [नद्वयात् षोडशरैः भुजङ्गः] भुजङ्ग.

Any number of भगणs + गग [भाः गौ भुजङ्गविलासः H. 2. 400] भुजङ्गविलास.

Any number of रगणs [यथेष्टं रा मत्तमातङ्गः H. 2. 394] मत्तमातङ्ग.

नग + 11 रगणs [नभ्यां एकादशराः मालती H. 2. 390] मालती.

6 ल + 3 ग + Any यगणs [लृगिभ्यां याः मेघमाला H. 2. 393] मेघमाला.

6 ल + 12 रगणs [नद्वयात् लीलाकरः सूर्यरैः उक्तः Mm. 21. 2] लीलाकर.

नग + 14 रगणs [नभ्यां चतुर्दशराः लीलाविलासः H. 2. 390] लीलाविलास.

6 ल + 7 भगणs + गग [रसलात् सप्तभा गौ वर्णकः Utpala. v. 62] वर्णकः.

7 ल + any Gaṇas [लसप्तकात् यथेष्टं गणाः वातः Jk. 6. 33] वात.

6 ल + 10 रगणs [नद्वयाद् दशरैः व्यालः उदीरितः Mm. 21. 1] व्याल.

6 ल + 14 रगणs [नद्वयात् मनुरै शङ्खनामा दण्डको मतः Mm. 21. 3] शङ्ख.

6 ल+ 15 रगणs [नद्वयात् तिथिरैः पद्मको मतः Mm. 21. 2] पद्मक, समुद्र.

6 ल + 4 रज pairs + रलग [नद्वयात् रजयोः चतुष्कयुता रलगाः समुद्र ईरितः Utpala. v. 63] समुद्र.

3 ल + any Gaṇas [गतिलघ्वादिकाः गणाः सिंहाह्वयः Jk. 6. 33] सिंह.

Any number of यगणs [यथेष्टं याः सिंहक्रीडः H. 2. 396] सिंहक्रीड.

5 ल + Any यगणs [लैर्यथेष्टं याः सिंहविक्रीडः H. 2. 396] सिंहविक्रीड.

नग + 10 रगणs [नभ्यां दशरैः हेलावली उक्ता H. 2. 390] हेलावली.

III वर्णवृत्तः - अर्धसमचतुष्पदी

(The figures within the brackets refer to the number of letters in the 1st and 2nd lines forming the half.)

र, जरलग (3-8) [ओजे (विषमे पादे) रः; युजि (समे पादे) ज्रलगाः कामिनी H. 3. 20] कामिनी.

र, जरजर (3-12) [ओजे रः, युजि ज्रज्राः शिखी H. 3. 21] शिखी.

र, जरजरजग (3-16) [ओजे रः, युजि ज्रज्रा ज्गौ नितम्बिनी. H. 3. 22] नितम्बिनी.

र, जरजरजरलग (3-20) [ओजे रः, युजि त्रिज्रौ ल्गौ वारुणी H. 3-23] वारुणी.

र, जरजरजरजर (3-24) [(विषमे) रः (समे) चतुर्ज्रौ वर्तसिनी H. 3. 24] वर्तसिनी.

सलग, ससलग (5-11) [(ओजे) स्लगाः, (युजि) सिल्गाः इला H. 3. 26] इला.

सलग, 8 स (5-24) [(ओजे) स्लगाः, (समे) सुः (सकाराष्टकं) मृगाङ्कमुखी H. 3. 27] मृगाङ्कमुखी.

रजग, जरलग (7-8) [(ओजे) राज्गौ, (युजि) जरौ लगौ यदा तदा प्रवर्तकम् Jk. 3. 9] प्रवर्तक.

जरलग, र (8-3) [कामिन्याश्च व्यत्यये वानरी H. 3. 25] वानरी.

रसलग, सजजग (8-10) [रौं लगौ विषमे यदि। सजजा गुरुलैलिता समे Vr. 4. 1. 1] ललिता.

ससस, भभभग (9-10) [(ओजे) सससा; (अनोजे) भभभा गः Vjs. 3. 51] भामिनी.

तजरग, मसजगग (10-11) [ओजे भद्रविराद् तज्रा गोऽनोजे मसजा गौ Mm. 21. 14] भद्रविराद्.

सजसग, भरनगग (10-11) [ओजे केतुमती सज्सा गोऽनोजे भरना गौ Mm. 21. 15] केतुमती.

ससजग, सभरलग (10-11) [विषमे ससजास्ततो गुरुः। समपादे मुरली सभर्लगाः। Vr. 4. 5. 1] अपरवक्त्र, प्रबोधिता, मुरली, ललिता, विबोधिता, वियोगिनी, शिखामणि, सुन्दरी.

सससग, भभभगग (10-11) [सह सत्रितयेन गुरुश्चेत्। भत्रितयेन च वेगवती गौ Jk. 3. 4] वेगवती, सारसिका.

भभभग, सससस (10-12) [(ओजे) भभभगाः, अनोजे तु सचतुष्कम् Vjs. 3. 52] प्रसन्ना.

मससग, सभमस (10-12) [(ओजे) मसागाः, (अनोजे) सभासाः करिणी H. 3. 13] करिणी.

जतजगग, ततजगग (11-11) [जतौ जगौ गो विषमे, समे स्यात् तौ जुगौ ग एषा विपरीतपूर्वा Vr. 4.7] विपरीताख्यानकी, हंसी.

ततजगग, जतजगग (11-11) [आख्यानकी तौ जगुरू गमोजे, जतावनोजे जगुरू गुरुश्चेत्॥ Vr. 4. 6] आख्यानकी, भद्रा.

सससलग, भभभगग (11-11) [उपचित्रं ससौ सल्गा ओजे भभभाः गुरू Mm. 21. 11] उपचित्र.

ननरलग, नजजर (11-12) [अयुजि ननरला गुरुः, समे यदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ Pp. 2. 3. 18] अपरवक्त्र, पल्लवितास्र.

भभभगग, नजजय (11-12) [भत्रयमोजगतं गुरुकौ चेत् युजि च नजौ ज्ययुतौ द्रुतमध्या Ckau.] द्रुतमध्या, चलमध्या,